उत्तर वैदिक कालीन राजनीतिक व्यवस्था

(1) छोटे-छोटे कबीले आपस में मिलकर राज्य बन गये ऋग्वैदिक काल में जन का प्रयोग जनता या कबीले के लिए किया गया लेकिन अब जनपद का तात्पर्य अस्तित्व में आ गया जनपद का तात्पर्य उस स्थान से था जहाँ पर कबीला बस गया था उत्तर वैदिक काल के साहित्य में राष्ट्र शब्द का प्रयोग होने लगा परन्तु शब्द को उस समय उस अर्थ में परिभाषित नहीं किया गया था।

जिससे एक निश्चित क्षेत्र द्योतक हो।
2. भरत और पुरु कबिला मिलकर कुरु (कौरव) राज्य की स्थापना की कुरु क्षेत्र राज्य उपरी गंगा घाटी के अवस्थित थी जिसकी राजधानी हस्तीनापुर थे थी हिन्दुओं का पवित्र महाकाव्य महाभारत इसी वंश से सम्बन्धित था है।
3 इसी प्रकार पंचाल कबिला उन लोगों को कहा गया जिनका अधिकतर प्रभाव दोआब मध्य भूभाग पर था इसे पंचालदेश के नाम से जाना जाता था
4 जब कबिले किसी क्षेत्र से सम्बन्धित हो गये और उस क्षेत्र के रूप में आने-जाने लगे, तो कबिलों के मुखिया एवं पद एवं कार्य शैली में परिवर्तन होना शुरू हुआ। राजा और मुखिया अब केवल पशुओं की लूट में सम्मिलित नहीं होता था बल्कि वह उस क्षेत्र का रक्षक बन गया था जिसके उसके कबिले के लोग रहते थे।
5. राजन्य जो ऋग्वेद काल के अभिजात समझा जाता था अब वह क्षत्रीय वर्ग के बदल गया। क्षत्रीय शब्द का शाब्दिक अर्थ है राज्य या क्षेत्र पर अधिकार होना क्षत्रीय वर्ग का मुख्य कार्य था अपने कबिले के लोग और उस क्षेत्र की रक्षा करना। जिसके वे बस गये थे विश था जनता को एक कर (tax) देना होता था जिसके बदले में क्षत्रीय जनता की रक्षा करते थे। और विश धीरे-धीरे क्षत्रीय वर्ग के सहायक बन गये। भूमि कर तथा बली अब इच्छा अनुसार देने वाले उपहार नहीं थे बल्कि अब नियमित कर तथा नजराना देने वाली प्रथा का उदय हुआ।
6. उत्तर वैदिक ग्रन्थों में संकेत मिलता है कि राज्य में प्रधान था राजा का निर्वाचन होता था लेकिन धीरे धीरे राजा ने अपने पद को आनुवांशिक बना लिया था

Scanned with CamScanner

7 इस काल के हमें निरंकुश राजतंत्र का आभास मिलता है। सभा और समिति के दोनों लद गये विदथ का तो नाम निशान मिट गया। सभा और समिति अस्तित्व में तो रहे लेकिन इनकी शक्ति काफी कम हो गयी स्त्रियों का सभा में प्रवेश वर्जित हो गया।।

8 ऋग्वेद काल में लोग यहां राजन को स्वेच्छा से चढ़ावा देते थे जिसे बली कहा जाता था। वह बली उत्तर वैदिक काल में आवश्यक हो गया और कर संग्रह करने वाले एक अधिकारी का वर्णन मिलता है जिसका नाम "संग्रहीतृ" कहा जाता था

* (i) उत्तरवैदिक काल में राजा के बलि का हिसाब किताब रखने वाले एक पद का वर्णन मिलता है जिसे "भागदुध" कहा जाता था

(ii) अथर्ववेद के अनुसार राजा को आय का 16वां भाग प्राप्त होता था

9. राजा अपने प्रतिष्ठा एवं अधिकार को बढ़ाने के उद्देश्य से विभिन्न प्रकार के कर्मकाण्ड एवं यज्ञ को सम्पादित करने लगा। कुछ यज्ञ इस प्रकार है।

(a) राजसूय यज्ञ - राजा के अभिषेक से सम्बन्धित था जो एक दिन का होता था जिसमें सोम पिया जाता था तथा अन्य कर्म होते थे इसमें पूरे एक वर्ष की लम्बी अवधि के तक छोटे-मोटे कृत्य होते थे।

(ii) राजसूय-यज्ञ के बाद यह समझा जाता था कि राजा को एक दिव्य शक्ति मिल गयी

(iii) प्रमुख राज्याधिकारी इस कृत्य में भाग लेते थे राजा राजकीय वस्त्रों में पुरोहित से धनुष बाण ग्रहण करता था

(b) अश्वमेध यज्ञ -> (i) इस यज्ञ में एक घोड़ा अभिषेक के पश्चात सैनिकों द्वारा

सुरक्षित सौ अन्य घोड़े के साथ स्वतंत्र विचरण के लिए छोड़ दिया जाता था यह घोड़ा जहाँ चाहे वहाँ विचरण करता था इसका उद्देश्य अन्य राजाओं को चुनौती देना था

(ii) लगभग एक वर्ष तक राजा अपने रानियों सहित एवं अन्य उच्च अधिकारियों के साथ नित्य यज्ञ करता था यज्ञ के साथ साथ उनके पूर्वजों का भी प्रयोजन किया जाता था

(iii) वर्ष पुरा होने पर घोड़ा लौट आते थे और राजा का अभिषेक किया जाता था रानियां घोड़े को तिलक लगाती थी उसके बाद 600 घोड़े के साथ बली दी जाती थी राजा की रानियां गाव की परिक्रमा करती थी पटरानी को घोड़े के बगल में इस प्रकार सोयाती जाती थी मानो वह सहवास की मुद्रा में हो तत्पश्चात मांस को भुना जाता था उसके बाद 21 बांझ गायों को बलि दी जाती थी पुरोहितों को दान दक्षिणा से भरपुर सम्पत्ती दी जाती थी

* राजसूय यज्ञ के संचालन करने वाले पुरोहिताध्यक्ष को दक्षिणा के रूप में 240,000 गायें दान दी जाती थी।
* अश्वमेध यज्ञ निः सन्देह शक्तिशाली राजाओं द्वारा की जाती थी

(c) वाजपेयी यज्ञ → वाजपेयी यज्ञ का उद्देश्य प्रजा का मनोरंजन था या राजा द्वारा शौर्य प्रदर्शन कर लोकप्रियता हासिल करना होता था

Scanned with CamScanner